मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता।

दुनियां के मजदूरो, एक हो।

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है।

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 43 | जनवरी 1992 | 50 पैसे

मजदूरों की बेड़ियाँ : क्षेत्रवाद

फैक्ट्रियों और गन्दी बस्तियों में बदहाली का जीवन जीने को मजदूर मजबूर है पूंजीवादी व्यवस्था के हर रूप में यह स्वाभाविक है, लुटेरी व्यवस्थाओं में यह आम बात है। फिर भी लड़-झगड़ कर मजदूर छोटी-मोटी सहुलियतें हासिल कर ही लेते हैं। पर इससे सौ भूखों के बीच दो रोटी जैसी हालत ही बन पाती है, उससे बेहतर नहीं। सचेत संगठित शक्तिशाली संघर्ष के अभाव में मजदूरों का गुस्सा ऐसी हालत के लिये असल में जिम्मेदार पूंजी के नुमाइन्दों पर नहीं उतर पाता वल्कि अधिकतर होता यह है कि मजदूर एक-दूसरे पर ही अपनी भड़ास निकालते हैं। कभी एडवान्स के लिये तो कभी कैन्टीन में रोटी की लाइन में, कभी पानी के लिये तो कभी चार इन्च जगह के लिये परेशान मजदूरों का आपस में तू-तड़ाक करना आम बात है। आपसी उठा-पटक में इक्कीस होने के लिये जाति, धर्म, इलाका आदि का इस्तेमाल अपनी-अपनी ताकत बढाने के लिये किया जाता है। इस प्रकार जरूरत से बहुत ही कम चीजों का उपलब्ध होना मजदूरों की आपसी रस्सा-कसी को जन्म देकर बिरासत में मिली जाति, क्षेत्र आदि की बेड़ियों को मजबूत करने का काम करता है। ऐसे झगड़ों में पुलिस की चाँदी रहती है। मैनेजमेंटें इस प्रकार के झगड़े करने के लिये मजदूरों की बेवकूफी पर घड़ियाली आँसू बहाती हैं और ऐसे झगड़ों के बीज बोने व उन्हें खाद-पानी देनेका काम करती हैं। किसी फेक्ट्री में जब मजदूरों का असन्तोष मैनेजमेंट के खिलाफ संघर्ष का रूप ले लेता है तब तो मैनेजमेंटों को खुले आम बोतलें-नोट बाँट कर मजदूरों में कभी जाट-गूजर के नाम पर तो कभी पूरबिया-लोकल के नाम पर बखेड़े खड़े करने की कोशिशें करते देखा जाता है। रही पूंजीवादी राजनीति की बात तो यहाँ तो हर पूंजीवादी पार्टी की दुकान चलती ही जाति, धर्म, इलाका आदि के नाम पर जहर फैला कर है। खैर, एक घटना पर नजर डालिये और कृपया उससे सीखिये।

विक्टोरा टूल्स मैनेजमैंट 80 मजदूरों का गेट रोकने के बाद 35-40 नये मजदूर भरती करके काम चला रही है। अपनी ताकत बढाने के लिये हर रोज जलूस जैसे शुरुआती कदम उठाने की बजाय विक्टोरा मजदूर पूंजीवादी कानूनी दाँव-पेच व महीना-बीस दिन में एक दिन की रस्मी मीटिंग जैसे कदमों पर थोथी आस लगाये थे/हैं। पर इन मजदूरों का अड़े रहना मैनेजमेंट की परेशानी थी। ऐसे में फैक्ट्री के निकट स्थित एक छोटी झुगी बस्ती में एक छोटे-से झगड़े का विक्टोरा मैनेजमेन्ट ने इस्तेमाल किया।

25 सैक्टर स्थित उस झुगी बस्ती के ज्यादातर निवासी बिहार व नेपाल के हैं। विक्टोरा टूल्स में काम करने वाले कुछ नेपाली मजदूर भी वहाँ रहते है 11 नवम्बर को गेट रोके जाने के बाद से विक्टोरा टूल्स के मजदूर इस झुग्गी बस्ती की बाजु में फैक्ट्री गेट के सामने धरने पर बैठे हैं और इक्ठ्ठा खाना बनाते है। नेपाली मजदूर इस काम में काफी सक्रिय है।

15 दिसम्बर को साँय झुग्गी बस्ती में एक छोटा-मोटा झगड़ा हुआ। विक्टोरा मैनेजमेंट ने उसे हवा दी और 16 को सुबह बिहारी बनाम नेपाली के नाम पर बहुत मार-पीट हुई। पन्द्रह-बीस लोग घायल हुये, कुछको दिल्ली-फरीदाबाद के अस्पतालों में भरती कराना पड़ा। घटना के बाद पुलिस की हरकतों से "बिहारी" अपनी झुग्गियां छोड़ कर भागे। क्षेत्रीय आधार पर अत्याचार होने के किस्से बढा-चढा कर प्रचारित किये गये पर मामले ने तूल नहीं पकड़ा। हर फैक्ट्री-हर बस्ती मे मिली-जुली आबादी वाली फरीदाबाद जैसे नये इन्डस्ट्रीयल एरियाओं की विशेषता ने इस घटना को भी मजदूर वर्ग के लिये ज्यादा नुकसानदायक नहीं बनने दिया पर ऐसी घटनायें रोंकने के लिये मजदूर पक्ष के सचेत हस्तक्षेप की जरूरत को कम करके आँकना खतरनाक होगा। विक्टोरा टूल्स के परेशान मजदूरों की परेशानी इस घटना ने और बढा दी जबकि मैनेजमेंट को लाभ ही लाभ हुआ।

ऐसे मामलों में किसने पहले पत्थर मारा जैसी बातों को तूल देना मजदूरों के बीच झगड़ा बढाने का ही काम करता है। "मुजरिमों" को पकड़ने में पुलिस की मदद करना जैसे कदम मजदूरों की बरबादी की राह है। इस प्रकार के भड़के/-भड़काये गये झगड़ों को ठन्डा करने की कोशिशें करना मजदूर पक्ष की जरूरत है।

उलझनों से घिरे विक्टोरा मजदूर इस चोट से और कमजोर हुये हैं। ऐसे में अपनी ताकत बढाने के लिये नये कदम उठाने में और देरी इन मजदूरों के आन्दोलन को तबाह कर देगी। पिछले अँक में भी हमने सुझाव दिया था और अपनी वही बात दोहरा रहे हैं—हर रोज फैक्ट्री गेट से बल्लबगढ़ कोर्ट तक जलूस निकालना आरम्भ करके विक्टोरा मजदूर अपनी ताकत बढाने की राह पर बढ सकते हैं। पांच-छह दिन लगातार ऐसे जलूस निकाल कर, अपने परिवारों को इन जलूसो में शामिल करके और सहयोगी मजदूरों की भागीदारी से अपनी बढती ताकत का अहसास विक्टोरा मजदूर स्वयं करने लगेंगे। हाँ, जिन तौर-तरीकों को इन मजदूरों ने अपना रखा है उनसे वे सफल नहीं होंगे।

मजदूर पक्ष के सचेत संगठित शक्तिशाली संघर्ष के निर्माण के लिये अन्य बेड़ियों की तरह क्षेत्रवाद की बेड़ियों को पहचानना और उन्हें तोड़ने के लिये कदम उठाने जरूरी है।

धनबाद से रिपोर्ट

मजदूरों की कमजोरी और ताकत

भारत में सब कोयला खदाने केन्द्र सरकार की सम्पत्ति हैं। कोयले की धूल-गर्मी-नमी आदि से बचाव के लिये प्रबन्ध में कमी की वजह से काले फेफड़े आदि बीमारियों के खदान मजदूर शिकार होते हैं। सरकारीकरण के बाद से ताम-झाम तो बहुत हुआ है, ढोल भी खूब पीटे गये हैं पर मजदूरों को स्वास्थ्य के क्षेत्र में वास्तव में राहत काफी कम मिली हैं। प्रमुख कोयला खदान क्षेत्र से दो मित्रों ने एक रिपोर्ट भेजी है जिसमें ताम-झाम व ढोल की पोल के साथ ही मजदूरों की कमजोरी व ताकत के पहलू भी साफ-साफ उभर कर सामने आते हैं। बिहार में जातिवादी-क्षेत्रीय-धार्मिक फसाद की रिपोर्टें पूंजीवादी अखबारों में खूब होती हैं पर वहाँ के मजदूर आन्दोलनों की खबरों पर चुप्पी साध ली जाती हैं। इसलिये धनबाद क्षेत्र के इस घटनाक्रम की जानकारी यहाँ मजदूर आन्दोलन के विकास में काफी सहायक होगी।

गोधर कोयला खदानें धनबाद शहर से 6-7 किलोमीटर दूर हैं। उमर मियाँ इन खदानों में लोडर थे। भारी काम करने वाले उस मजदूर को खाँसी-सर्दी-बुखार ने 1988 में जकड़ लिया। लगातार की बीमारी से तंग होकर उमर मियाँ ने कई बार मैनेजमेंट से हल्के काम अथवा मेडिकली अनफिट घोषित कर दिये जाने के अनुरोध किये। लेकिन उमर की एक नहीं सुनी गई।

वास्तव में किसी मजदूर को अनफिट घोषित करने के लिये मैनेजमेंट अधिकारी व डाक्टर आमतौर पर मजदूरों से मोटी रिश्वत लेते हैं। गोधर खदानों के परसनल अफसर ने उमर मियाँ से भी काफी पैसे माँगे थे। रिश्वत नहीं देने पर उमर को बीमारी की हालत में भी लोडर का भारी काम करना पड़ा।

आखिरकार दिसम्बर 90 में उमर मियाँ को सर्वोच्च मेडिकल बोर्ड के सामने पेश किया गया। और डाक्टर साहबों ने उमर को भारी काम के लिये फिट बताया पर लिखित में कुछ भी नहीं दिया। बीमार उमर को भारी काम करते रहना पड़ा और बीमारी सीरियस होती गई।

हालत ज्यादा खराब होने पर सितम्बर 91 में उमर मियाँ अपने साथी मजदूरों के साथ खदान सुपरिटेंडेन्ट से मिले। बात बढ़ती देख परसनल अफसर का ट्रान्सफर कर दिया गया उमर मियाँ को पुनः सर्वोच्च मेडिकल बोर्ड के समक्ष पेश करके अनफिट घोषित करवाने का आश्वासन दिया गया। आश्वासन मात्र आश्वासन रहा और उमर की हालत बिगड़ती गई पर मैनेजमेंट के अनुसार वह भारी काम के लिये फिट था।

8 अक्टूबर 91 को उमर मियाँ की तबीयत इतनी ऊराब हो गई कि उसके साथी मजदूरों का गुस्सा भड़क उठा। अपने कन्धों पर उठा कर वे उमर को गोधर अस्पताल ले कर गये। गुस्से से भरे मजदूरों को देख डाक्टर घबरा गये। अफरा-तफरी में डाक्टरों ने आखिरी साँस ले रहे उमर को 9 अक्टूबर को सर्वोच्च मेडिकल बोर्ड के सामने पेश होने को कहा। 9 अक्टूबर को सुबह छह बजे उमर मियाँ की मृत्यु हो गई।

रिश्वतखोरी ने एक और मजदूर की जान ले ली। मजदूर इक्ठ्ठे हुये और उमर मियाँ की लाश को लेकर गोधर कोयला खदान के दफ्तर पर पहूंचे। मिनटों में यूनियनों-पार्टीयों-ग्रुपों-झन्डों की बाधाओं को तोड़ कर मॉर्निंग शिफ्ट के चार हजार मजदूर एकजुट हो गये। टाईम रेट-पीस रेट की दीवारें ढह गई और नेताओं से पूछे बिना, नेताओं का इन्तजार किये बिना मजदूर खुद-ब-खुद संगठित हो गये।

संघर्ष की राह पकड़े चार हजार मजदूरों ने फैसला किया कि लीडरों को भाषण नहीं देने देंगे और न ही नेताओं को दादागिरी करने देंगे। गोधर की सब खदानों में प्रोडक्शन ठप्प हो गया और मजदूरों ने मैनेजमेंट को दफ्तर में घेर लिया। मजदूरों की हुँकार से मैनेजमेंट घबरा गई और डरे बच्चों के समान अधिकारी लोग मजदूरों के आदेशों का पालन करने लगे। सैकड़ों मजदूरों ने मैनेजमेंट के सामने अपनी डिमान्डें रखी, पाँच-सात की टोली ने नहीं। जुझारू मजदूरों के सामने मैनेजमेंट को झुकना पड़ा। दुखद परिस्थिति में एकता और पहलकदमी आम मजदूरों द्वारा अपने हाथों में रखने ने कमजोरी के स्थान पर ताकत, मजदूर ताकत की रचना की। मजदूरों ने एक जीत हासिल की।

संपर्क—मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन. आई. टी. फरीदाबाद 121001

पायलटों की हड़ताल

पूंजीवाद एक विश्व व्यवस्था है और इस व्यवस्था का संकट देशों के आर्थिक संकट के रूप में भी अभिव्यक्त होता है। अपनी व्यवस्था के संकट के बोझे को मजदूरों पर लादने के लिये कदम उठाना पूंजी के घुमाइन्दों के लिये सामान्य काम है। आजकल भारत में कहीं डायरेक्ट तो कहीं घुमा-फिरा कर मजदूर वर्ग पर हमले बहुत तेज हो गये हैं। अब तक छंटनी जैसे हमलों से यहाँ लगभग अछूते रहे परमानेन्ट सरकारी कर्मचारियों को भी खुले आम छंटनी हो रही है। पूंजीवादी प्रचारतन्त्र मजदूरों पर हमलों के लिये माहौल बनाने में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। मजदूरों की अयोग्यता आदि की बातों को नमक-मिर्च लगा कर उछालना, मजदूरों को सूअरों के माफिक हर समय खाने में जुटे रहने वाले दर्शाना इस पूंजीवादी प्रचार का एक प्रमुख अंग है। हाल ही की इंडियन एयरलाइन्स पायलटों को चाणचक्क हड़ताल के समय कार्टूनो-सम्पादकीयों के जरिये पूंजीवादी अखबारों ने इन उच्च कुशल श्रेणी के मजदूरों की जम कर खिल्ली उड़ाई और इनके खिलाफ सख्त कार्रवाई के लिये चीख-पुकार मचाई।

घुमा-फिरा कर मजदूरों के वेतन काटने-सहुलियतें कम करने जैसी मैनेजमेंट की कार्रवाई के खिलाफ पायलेटों ने सामुहिक सिक लीव ले कर 21-22 दिसम्बर को इंडियन एयरलाइन्स की उड़ानों को ठप्प कर दिया और जीत हासिल की। पिछले दो महीनों में तीसरी बार पायलेट डायरेक्ट कार्रवाई पर उतरे थे। इससे पहले एयरलाइन्स के इंजिनियरों ने मैनेजमेंट के हमलों को फेल किया था।

अपनी एकता और विशेष परिस्थितियों की वजह से ही यह उच्च कुशल मजदूर ऐसा कर पाये हैं. लेकिन बदलते माहौल को देखते हुये अधिक दिनों तक यह मजदूर अकेले तौर पर पूंजीवादी हमलों को रोक नहीं पायेंगे। और फिर यह भी याद रखने की जरूरत है कि पूंजीवादी तन्त्र जरूरत पड़ने पर हर प्रकार की नंगई पर उतर आता है—अमरीका में पायलेटों की हड़ताल को कुचलने के लिये वहाँ के राष्ट्रपति ने इमरजेन्सी कानूनों का इस्तेमाल किया था।

आनेवाले दिनों में अन्य मजदूरों की ही तरह पायलेटों पर भी मैनेजमेंटों के हमले बढ़ेंगे। यह पूंजीवादी व्यवस्था के गहराते संकट का लाजिमी परिणाम है। अतः पायलेटों द्वारा शिक्षा-संगठन-धन की प्राप्त विशेष सुविधाओं का क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन के विकास में इस्तेमाल करना स्वयं पायलेटों के हित में है।

सिराको में तालाबन्दी

मथुरा रोड पर बडकल मोड़ के पास सिराको प्रेसिंग फैक्ट्री है। आटोपिन ग्रुप की इस फैक्ट्री में 18 नवम्बर 91 को वर्ष 1991 में चौथी बार तालाबन्दी की गई।

लगता है कि परमानेन्ट मजदूरों को निकाल कर ठेकेदारी प्रथा स्थापित करने की मैनेजमेंट की योजना है। बारह साल तक यूनियन के प्रेसीडेन्ट के तौर पर हलवापूरी खा रहे व्यक्ति की तरक्की स्टाफ में करके मैनेजमेंट छंटनी के लिये ताना-बाना बुन रही है। कभी चीफ सिक्योरटी तो कभी स्टाफ के नाम पर काफी समय से मैनेजमेंट के लिये गुन्डागर्दी कर रहे व्यक्ति द्वारा सिराको के एक मजदूर का चाकू मारना इसी सिलसिले की कड़ी है। सिराको में 300 मजदूर काम करते हैं इसलिये अक्टूबर माह का वेतन पूंजीवादी कानून के मुताबिक सात नवम्बर से पहले दिया जाना चाहिये था पर १६ नवम्बर तक वेतन नहीं देना और १6 को गेट मीटिंग के समय एकाउन्ट मैनेजर द्वारा मजदूरों को अंगूठा दिखाना तालाबन्दी के लिये बहाना बनाने के वास्ते मैनेजमेंट की हरकत थी। मजदूर उकसावे में आ गये।

जनवरी 92 के आरम्भ में 18 नवम्बर को की गई लाक आउट जारी थी। 9 मजदूरों को निकालने पर अड़ने जैसी शतरंज की चाल मैनेजमेन्ट ने मजदूरों की हिम्मत तोड़ने के लिये चली है।

इन हालत में फैक्ट्री गेट पर धरना-ताश खेलना और चन्द लोगों द्वारा सरकारी साँडों के पास भाग-दौड़ ऐसे कदम नहीं हैं जिनसे मैनेजमेंट की छंटनी योजना को जाम किया जा सकेगा। सिराको मजदूरों को मजदूर पक्ष की ताकत कारगर तौर पर बढ़ाने वाले कदमों के बारे में सोचना चाहिये। हर रोज फैक्ट्री गेट से जलूस निकालना इस दिशा में शुरूआती कदम है। सिराको मजदूरों से विचार-विमर्श का हम स्वागत करेंगे।

अमरीकी उद्योगों में संकट

पिछले अंक में हमने अमरीकी बैंकों में संकट की चर्चा करते समय कहा था, "आमतौर पर यह सामाजिक जीवन के भौतिक उत्पादन की पूंजीवादी प्रणाली के संकट ही होते हैं जो कि अन्य क्षेत्रों की तरह बैंकों की लड़खड़ाहट की भी जड़ में होते हैं।" पूंजीवादी व्यवस्था के संकट की चपेट में आये अमरीकी उद्योगों की एक झलक देखिये।

प्रतिवर्ष 55 लाख कार व ट्रक बनाने वाली जनरल मोटर्स भौतिक उत्पादन करने वाली अमरीका की सबसे बड़ी कम्पनी है। 1991 के प्रथम 9 माह में ही इस कम्पनी को 55 अरब रूपयों का घाटा हुआ। कम्पनी के चेयरमैन ने एक प्रेस कान्फ्रेन्स में कहा कि कारों की बिक्री में लगातार गिरावट का बुनियादी कारण गतिहीन अमरीकी अर्थव्यवस्था है। और अपनी व्यवस्था के संकट का बोझा मजदूरों पर थोपने के लिये जनरल मोटर्स मैनेजमेंट अमरीका व कनाडा स्थित अपनी फैक्ट्रियों में से 21 को बन्द करके 74000 मजदूरों को नौकरी से निकाल रही है।

अमरीकी अर्थव्यवस्था में गिरावट के कारण आई बी एम, जो कि दुनियाँ की सबसे बड़ी कम्प्यूटर बनाने वाली कम्पनी है, उसने 1991 में अमरीका में अपनी फैक्ट्रियों में से बीस हजार मजदूरों की छंटनी कर दी।

पिछले दिनों ही अमरीका की अन्य महारथी कम्पनियों जैसे फोटोस्टेट मशीनें आदि की निर्माता जेरोक्स, हवाई जहाज बनाने वाली मैकडोनल डगलस, बिजली घर निर्माता वेस्टिंग हाउस. सियर्स रोबक आदि ने भी बड़े पैमाने पर मजदूरों की छंटनी की घोषणा की है। [सामग्री हमने 20 दिसम्बर 91 के नवभारत टाइम्स से ली है।]

अमरीका सरकार द्वारा अमरीका में कृषि क्षेत्र को सब्सीडी देने के विरोध में आस्ट्रेलियाई फारमरों ने अमरीकी राष्ट्रपति के खिलाफ प्रदर्शन किया.....

और हाँ, अमरीका में यह सब '-प्रायवेट' हैं।

रूस-पूर्वी यूरोप में समाजवाद का नकाब लगाये राज्य-पूंजीवादी किलों का ढहता और अमरीका में बैंकों-उद्योगों के सम्मुख गहरा संकट दरअसल पूंजीवादी व्यवस्था के गहराते संकट के लक्षण मात्र हैं। व्यवस्था के ऐसे संकटों ने 1914 और 1939 में विश्व युद्धों को जन्म दे कर करोड़ों मनुष्यों को मौत के मुँह में धकेला था। आज जगह-जगह बढ़ रही मार-काट पूंजीवादी व्यवस्था के संकट के गहराते जाने के साथ मानव जीवन को दाँव पर लगाती दिखाती है। क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन का विकास ही मनुष्यों के लिये आशा की किरण है।

हलचल...

❀ बिहार सरकार के कर्मचारियों और अध्यापकों की हड़ताल को चलते डेढ महीने से ऊपर होगया है। इन आठ लाख वेतनभोगियों की हड़ताल से पूंजीवादी जातिवादी राजनीति को कान पर जुँ रेंगती भी महसूस नहीं हो रही। लल्लू सरकार की समर्थक बाँये बाजू वाली पूंजीवादी राजनीतिक धाराओं को इस हड़ताल से बस इतनी असुविधा हो रही है कि इनके प्रतिनिधि कभी अखबारों में बयान दे देते हैं तो कभी मद्रास सम्मेलन की व्यस्तता के बावजूद बिहार के मुख्यमन्त्री को टेलीग्राम भेज देते हैं... हड़तालियों और उनके परिवारों द्वारा 9 जनवरी से रेल-रोड़ जाम वाली घोषणा अगर थोथी है तो यह हड़ताल भी फर्जी हड़तालों जैसी ही है।

❀ भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स की हरिद्वार यूनिट के आठ हजार मजदूरों ने दिसम्बर माह में हफ्ते-भर हड़ताल की—मैनेजमेंट के धड़ों के बीच इस दौरान सड़क-छाप झगड़े हुये। मजदूरों को पूंजीवादी साँडों की भिड़न्त का लाभ उठाना चाहिये। और पूंजीवादी गुटों की उठा-पटक में मोहरे बनने से बचने के लिये मजदूरों को अपने हित की डिमान्डें साफ-साफ तौर पर प्रमुखता से सामने रखनी चाहियें।

❀ अमरीका में डाक विभाग के साढ़े सात लाख वरकरों में से 90-91 में 37 हजार की छँटनी की गई है। अमरीका के पोस्टमास्टर जनरल ने डाक विभाग में 47000 नौकरियाँ और खत्म करने की घोषणा की है।

हिम्मत हौसला जरूरी

एलसन काटन-के जी खोसला कम्प्रेसर-स्टेवरीवेयर-सिराको— ... के मजदूर अपनी-अपनी फैक्ट्रियों के गेटों पर काले-पीले झन्डों के इर्द-गिर्द हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं।

हर रोज 400 राजदूत मोटर-साइकल बनाने वाले एस्कोर्ट्स सैकन्ड प्लान्ट के मजदूरों से अब 150 से भी कम की प्रोडक्शन ली जा रही है और यह संख्या दिन व दिन कम की जा रही है। मैनेजर निकाले जा रहे हैं, वालन्टरी रिटायरमेंट और ट्रान्सफर के नोटिस लग रहे हैं, छंटनी की तलवार चमचमा रही है और मजदूर हैं कि मुँह बाये अपने दिन गिन रहे हैं। यही हाल यूनिवर्सल इंजिनियरिंग में है। यही स्थिति.....

कुछ समय पहले ही केल्विनेटर सपना-सोमाग टैक्सटाइल्स थॉमसन प्रेस, अमेटीप मशीन टूल्स.....के मजदूर पूंजीवादी हमलों में पिटे हैं।

इन हालात से पार पाने के लिये पहली जरूरत है आम मजदूरों द्वारा अपनी-अपनी फैक्ट्रियों में बिचौलियों को ठोकर मार कर अपने दम पर कदम उठाना। तेज हो रहे पूंजीवादी हमलों से निपटने के लिये लाल-पीले-हरे-तिरंगे झन्डेधारी दुकानदारों को अंगूठे दिखा कर अलग-अलग फैक्ट्रियों के मजदूरों द्वारा आपस में हाथ मिला कर संघर्ष की राह पर बढ़ना दूसरा जरूरी कदम है। निराशा-हताशा हमें गड्ढे में और धकेलेगी, हिम्मत-हौसले से ही राह खुलेगी। फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने-शक्तिशाली बनाने के काम में हाथ बटाने के इच्छुक लोगों से विचार-विमर्श का हम स्वागत करेंगे।

बाटानगर में मजदूरों ने हड़ताल शुरू कर दी है। फरीदाबाद में बाटा फैक्ट्री मजदूरों को 1989 वाली गलती नहीं दोहरानी चाहिये। बाटा मैनेजमेंट के खिलाफ बाटा नगर फरीदाबाद-मोकामा-दीघाघाट के मजदूरों की एकता जरूरी है। पिछले अनुभवों के मद्धेनजर लाल-पीले-तिरंगे बिचौलियों से सतर्क रहना जरुरी है।

0X0

हमारे लक्ष्य हैं:— 1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिये इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा 'मजदूरों तक पहुचाने के प्रयास करना। 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनियां के मजदूरों की एकता के लिये काम करना और इसके लिये आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने क काम में हाथ बटाना। 3 भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी सगठन बनाने के लिये काम करना। 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिये काम करना।

समझ, संगठन और सघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को ताल-मेल के लिये हमारा खुला निमन्त्रण है। बातचीत के लिये बेझिझक मिलें। टीका टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए उत्तरांचल प्रिन्टर्स, फरीदाबाद से मुद्रित